उपसंहार

नाटक एक ऐसी साहित्य की विधा है जो अपने दृश्यत्व के कारण साहित्य की अन्य विधाओं से अलग है । नाटक अपने दृश्यत्व के कारण दर्शकों के लिए अधिक रमणीय, मनोरंजक और आस्वाद्य होता है । उपन्यास, कहानी जैसी रचनाओं में रचनाकार जो कहता है इसे नाटककार अपने नाटक में प्रेक्षकों में प्रेक्षकों के सम्मुख रंगमंच पर उपस्थित कर सकता है । यही कारण है कि नाटक को ' दृश्यकाव्य ' कहा जाता है और ' काव्येष्यु नाटकम् रम्यम् ' ऐसा माना जाता है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक में सुरेंद्र वर्मा अपना विशिष्ट एवं महत्त्वपूर्ण स्थान रखतें हैं । उनके नाटक संख्या में ऊँगलियों पर गिने जाने योग्य हैं पर वे अत्यंत मौलिक हैं । सामाजिक यथार्थता, पौराणिकता, समसामायिकता तथा ऐतिहासिकता जैसे विषयों को लेकर सुरेंद्र वर्मा ने अपने नाटकों का सृजन किया है ।

सातवें दशक के हिंदी नाटककारों में अपना विशिष्ट स्थान रखनेवाले सुरेंद्र वर्मा का जन्म मुंबई में 7 सितम्बर 1941 को हुआ है । भाषा विज्ञान में एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्होंने साहित्यिक रचना निर्माण में अपना स्थान बना लिया । उन्हें प्राचीन तथा मध्यकालीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति और अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा में गहरी दिलचस्पी रही । संगीत नाटक अकादमी दूवारा वे सम्मानित हैं ।

सुरेंद्र वर्मा ने दो कहानी संग्रह, चार उपन्यास, नौ नाटक, एक एकांकी संग्रह तथा एक व्यंग्यात्मक लेख आदि का सृजन कर हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि की हैं । उन्होंने एक रूपांतर, ' सुभाष दशोत्तर का मृत्युबोध ' और देवराज के काव्य में मानवता वादी दृष्टि समीसक्षात्मक लेखों में उनका समीक्षक रूप उभर उठा हैं । ' नया प्रतीक ' में उनका कवि रूप साकार हुआ है । इसके साथ-साथ ' नटरंग ', ' आजकल ', ' कल्पना ', ' प्रकर ' आदि पत्र-पत्रिकाओं में उन्होंने कई फुटकल साहित्य भी लिखा हैं । अपने जीवन अनुभवों ने ही उन्हें लेखन की सामग्री दी है । इसलिए वे एक सशक्त रचनाकार के रूप में ख्याति प्राप्त हैं ।

सुरेंद्र वर्मा ने सन् 1972 में प्रकाशित अपने प्रथम नाटक ' सेतुबंध ' के साथ एक नाटककार के रूप में हिंदी साहित्य में पदार्पन किया । उन्होंने सन् 1972 से 1990 तक सात मौलिक नाटकों का सृजन किया । उन्होंने अपने प्रत्येक नाटक में अलग-अलग विषयवस्तु को लेकर सामने आते हैं । ' सेतुबंध ' में उन्होंने नर-नारी संबंधों को उधृक्त किया हैं । ' द्रौपदी ' में जीवन में भौतिक साधनों को महत्त्वपूर्ण माननेवाले इन्सान को दर्शाया हैं । ' सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक ' नाटक में प्राचीन प्रथा एवं परंपराओं को स्पष्ट किया है और ' आठवाँ सर्ग ' में नए साहित्यकारों की स्वतंत्रता तथा अस्मिता जगाने का प्रयास किया है । ' शकुंतला की अंगूठी ' में आज के युवावर्ग की हिंसा की वृत्ति तथा अविश्वासपूर्ण स्वभाव आदि के दर्शन कराए हैं । वे अपने प्रत्येक नाटक में उद्देश्य की स्थापना करने में सफल हुए हैं ।

सुरेंद्र वर्मा ने ' सेतुबंध ' में वैवाहिक जीवन में जातीय दीवारों को तोड़ने का प्रयत्न किया है । प्रभावती ब्राह्मण जाती के प्रतिभाशाली कालिदास को चाहती है परंतु उसके पिता चंद्रगुप्त उसकी शादी अटाव नरेश रुद्रसेन-क्षत्रिय राजा से कराकर उसके वैवाहिक जीवन पर घोर आघात करते हैं । नाटककार ने यहाँ प्रभावती को चेतनाशीलता में ढालकर परंपरागत स्त्री स्वातंतत्र्य को नये संस्कारों में ढालने का प्रयत्न किया है ।

' द्रौपदी ' नाटक के माध्यम से पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण और यांत्रिकता के कारण मान जीवन की कटू और तनावपूर्ण पारस्पारिक संबंध आदि को चित्रित किया है । प्रस्तुत नाटक में सुरेखा मनमोहन के पारिवारिक जीवन में दाम्पत्य जीवन की घुटन, पत्नी के प्रति पति की असंतुष्टता, बच्चों का नैतिक अध:पतन आदि बातों से इस बिखरे परिवार का चित्रण किया है ।

' सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक ' नाटक की अवधारणा के पीछे सुरेंद्र वर्मा का एक महत् उद्देश्य स्पष्ट होता है । प्रस्तुत नाटक में उन्होंने अस्त हुयी सामाजिक परंपराओं को नए संस्कारों में ढलने का प्रयत्न किया हैं । नियोग-प्रथा इसका उदाहरण है । नपुंसकता के कारण नि:संतान स्त्री-पुरुष बाह्य-संबंध तलाश कर संतान प्राप्ति का प्रयत्न करते हैं । वास्तव में यह नियोग का ही नया रूप है । नाटककार ने पति की कुंठित यौन-आकांक्षाओं को नए सिरे से ढालने का प्रयत्न किया है ।

' आठवाँ सर्ग ' नाटक के माध्यम से नाटककार ने जाति-बिरादरी की सीमा-रेखाओं को तोड़कर चंद्रगुप्त की बेटी प्रियंगुमंजरी की शादी कालिदास से कराकर आधुनिक अंतर्जातीय विवाह के साथ इस घटना का संबंध दिखाकर प्राचीनता में आधुनिक समाज की झलक प्राप्त की है । इसके साथ-साथ नाटककार ने कालिदास के माध्यम से नए एवं आधुनिक साहित्यकारों की स्वातंत्र्यता एवं अस्मिता जगाने के साथ उनमें आनेवाली समस्या का समाधान भी प्रस्तुत किया हैं ।

' शकुंतला की अंगूठी ' नाटक के माध्यम से नाटककार ने नाटक के पात्रों के निजी जीवनका नाटक के कथ्य के साथ संबंध दिखाया है । ऐतिहासिक समस्याओं को आधुनिकता के साँचे में ढालकर आज के गतिमान, हिंसक, तनावपूर्ण तथा अविश्वास भरे जीवन का दर्शन कराया है । इससे आज के दुश्यंत का बिगड़ा रूप समाज के सामने लाने का प्रयास नाटककार का है । इस प्रकार नाटककार ने अपने प्रत्येक नाटक में अलग-अलग विषयवस्तु को स्थान दिया है । इससे उनकी समकालीन जिंदगी की अनुभूति और नाट्य साहित्य के प्रति प्रयोगधर्मिता परिलक्षित होती हैं ।

अभिनय की दृष्टि से सुरेंद्र वर्मा के सभी नाटक पूर्ण रूप से सफल परिलक्षित होते हैं । नाटककार ने अपने नाटकों को अभिनय की चारों विधीयों से परिपूर्ण बनाकर प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है । इससे नाटककार की प्रयोगशीलता, कल्पकता एवं सजीवता का परिचय मिल जाता हैं । मनोवैज्ञानिक धरातलकर पात्रों की भावभंगिमाएँ उनके क्रिया-कलाप तथा खण्ड़ित या विभाजित व्यक्तित्व को हू-ब-हू अभिव्यक्त करने में नाटककार कामयाब हुआ है । चारों नकाबों से युक्त मनमोहन (पात्र) का अभिनय विशेष रूप से उल्लेखनीय बन गया है ।

विवेच्य नाटकों में अंगिक के साथ-साथ वाचिक अभिनय में कुछ ऐसी विशिष्टता दिखायी देती है कि कभी एक ही पात्र अतीतकालीन भाषा का प्रयोग करता है तो दूसरी ओर प्रासंगिक अभिनय में वर्तमानकालीन शब्द प्रणाली का प्रयोग करता है । कभी-कभी यह भी दिखायी देता है कि एक ही समय पर अतीत और वर्तमान जीवन संदर्भ में विभिन्न पात्रों के अभिनय दिखायी पड़ते हैं । यह नाटककार की नाट्य संबंधी पैनी दृष्टि और वर्तमान जीवन संदर्भ की अपनी विशिष्ट सूझ-भूज के परिचायक हैं । विवेच्य नाटकों में अंकित विविध पात्रों के भावानुकूल अभिनय के भी सहज दर्शन होते हैं जो वर्तमान संदर्भ को उजागर करने में सक्षम हैं । अत: स्पष्ट है कि सुरेंद्र वर्मा अपने सभी नाटकों के द्वारा अभिनय

की साह्यता से दर्शकों एवं पाठकोंपर अपना प्रभाव छोड़ने में पूर्ण रूप से सफल हुए हैं । उनके सभी नाटक अभिनय की दृष्टि से उत्कृष्ट एवं सक्षम हैं ।

सुरेंद्र वर्मा के नाटकों का संगमंचीयता के संदर्भ में किए गए विवेचन के आधार पर स्पष्ट है कि उनके सभी नाटक रंगमंच पर खेले गए हैं । दृश्यबंध और मंचसज्जा के विशिष्ट प्रयोगों में ' सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक ', ' शकुंतला की अंगूठी ' और ' द्रौपदी ' विशेष उल्लेखनीय नाटक हैं । सुरेंद्र वर्मा का ' सेतुबंध ' यह सम्पूर्ण नाटक एक ही दृश्यबंध पर मंचित होता है । नाटककार सुरेंद्र वर्मा ने अपने नाटकों में तीन प्रकार की मंचसज्जा का प्रयोग किया है । जैसे --

1. पूर्ण रूप से अतीतकालीन पृष्ठभूमि को अभिव्यक्त करनेवाली मंचसज्जा -

   (अ) ' सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक '

   (आ) ' आठवाँ सर्ग '

   (इ) ' सेतुबंध '

2. अतीत का संबंध न रखते हुए सिर्फ आधुनिक जीवन संदर्भ से संबंधित मंचसज्जा- ' द्रौपदी '

3. मिश्र मंचसज्जा जिसमें अतीत और वर्तमान का मिश्र रूप नजर आता है ।

   ' शकुंतला की अंगूठी '

विवेच्य नाटकों में संवाद और भाषाशैली के अभिनव प्रयोग दिखायी देते हैं । इनमें खण्डित संवाद, उपमात्मक संवाद, लंबे संवाद, छोटे एवं लघु संवाद, एकालाप, सांकेतिक संवाद, टेलीफोन दूवारा संवाद आदि का प्रयोग प्रच्युर मात्रा में दिखायी देता है । विवेच्य नाटकों के संवादों में पात्रों के मनोविज्ञान को विशेष प्र-प्रय मिला है । इन नाटकों में संस्कृत, अंग्रेजी, उई आदि भाषाओं का वर्तमान जीवन के संदर्भ का यथार्थ प्रयोग हुआ है । सामान्यत: इन नाटकों के संवाद एवं भाषा पात्रानुकूल और घटनानुकूल हैं ।

नाटककार ने ध्वनि-संकेतों के अंतर्गत लोगों का कोलाहल, उद्घोषक की आवाज, नगाड़े की आवाज, नारियों की खिलखिलाहट, बच्चों की खिलखिलाहट, आहट, घोड़ों के टापों की एवं हिनहिनाहट की आवाज, पक्षी के बोलने की आवाज, ट्रैफिक का शोर, तालियाँ, घंटी की आवाज,

नुपूरों क आवाज, टेलीफोन की आवाज, आभूषणों एवं वस्त्रों की सरसराहट आदि का यथास्थान प्रयोग किया है । इससे नाटक में स्वाभाविकता आ गयी हैं ।

सुरेंद्र वर्मा के सभी नाटकों में पार्श्व संगीत योजना के अभिनव प्रयोग किये गए हैं । नाटककार ने अपने नाटकों में विविध प्रकार के संकेत दिए हैं, उन संकेतों के अनुसार भारतीय तथा पाश्चात्य वाद्य संगीतों का आयोजन किया है ।

नाटककार ने अपने कुछ नाटकों में गीतों के अभिनव प्रयोग किए हैं । इन गीतों के माध्यम भारतीय जन-जीवन का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है । साथ-ही-साथ कुछ नाटकों में ऐसे गीतों की रचना की गयी है जो अतीत की पृष्ठभूमि पर वर्तमान जीवन संदर्भ के व्यंग्यात्मक रूप में अभिव्यंजित करती है । उन गीतों का व्यंग्य आज के जीवन की विड़म्बना को संपाधित करता है । कुछ नाटकों में बालगीतों, प्रेमगीतों पहड़ों के लय और ताल के साथ गाने का प्रयास किया गया हैं ।

सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में पात्रों की वेष एवं केशभूषा को विविध शैलियों में दर्शाने का प्रयास किया गया हैं । कुछ नाटकों में अतीतकालीन तथा कुछ नाटकों में वर्तमानकालीन रूपसज्जा का प्रयोग कि गया है । ‘ सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक ’ तथा ‘ सेतुबंध ’ नाटकों में रूपसज्जा संबंधी कोई विश्लेषण नहीं दिया है । लेकिन नाटककार की इच्छा है कि नाटक पूर्ण रूप से ऐतिहासिक रूपसज्जा में मंचित हो ।

नाटककार सुरेंद्र वर्मा ने अपने सभी नाटकों में प्रकाश-योजना के विविध रूप सजीव एवं सज्जित किए हैं । विशेषत: उन्होंने नाटकों के अंक विभाजन तथा दृश्य विभाजन के लिए प्रकाश-योजना का उपयोग किया है । नाटकों के दृश्य परिवर्तन के लिए प्रकाश-योजना की विविधता का सार्थक प्रयोग किया है । प्रकाश-योजना व आयोजन में प्रस्तुतिकरण में विविध प्रकार के अनेक आधुनिक उपकरणों का उपयोग हुआ है । जैसे-फ्लैश बैक, साईक्लोरामा आदि । एक ही रंगमंच पर प्रकाश योजना के माध्यम से दो विरोधी दृश्यों का कलात्मक आयोजन ‘ सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक ’ नाटक में किया है, यह नाटककार की अपनी सूझ हैं ।

सुरेंद्र वर्मा ने अपने सभी नाटकों में वर्तमान जीवन संदर्भ के परिप्रेक्ष्य में स्पटीक बिम्बों तथा प्रतीकों के सार्थक प्रयोग किए हैं, जो पुरातन मिथकों को नया अर्थ देने में सक्षम हैं । अत: बिम्ब एवं प्रतीक योजना में वर्मा जी के नाटक पूर्णत: सफल परिलक्षित होते हैं ।

रंगमंचीय प्रस्तुति की दृष्टि से विवेच्य नाटक अत्यंत सफल हैं । ' सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक ', ' शकुंतला की अंगूठी', ' द्रौपदी ', ' आठवाँ सर्ग ' आदि नाटकों को मंच पर काफी सफलता प्राप्त हुयी है । इसमें ' शकुंतला की अंगूठी ' हिंदी के साथ-साथ मराठी तथा कन्नड़ में भी प्रदर्शित हो चुका है । अत: दर्शक और पाठकों में गहरी संवेदना निर्माण करने में सुरेंद्र वर्मा के सभी नाटक अत्यंत सक्षम हैं । इससे दर्शकीय संवेदना उजागर होने में काफी मदत मिली है ।

सुरेंद्र वर्मा ने अपने नाटकों द्वारा स्त्री-पुरुष संबंधों का निरूपन व्यावसायिक धरातल चित्रण किया है । स्पष्टत: उनकी दृष्टि से वर्तमान परिवेश में प्रेम शारीरिक आवश्यकता से अधिक कुछ नहीं हैं । अत: नाटककार ने स्वच्छंद यौन-संबंधों की वकालत करते हुए विवाह संस्थापर प्रश्नचिह्न लगाया है । ' द्रौपदी ' नाटक के द्वारा खून के रिश्ते को नकारकर प्रेम संबंधों और उन संबंधों की वैवाहिक परिणति का समर्थन भी हुआ है । प्रस्तुत नाटक द्वारा नाटककार ने समाज की उस विकृति को साकार रूप प्रदान किया है । जो पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण से हमारे समाज को दूषित कर रही हैं ।

काम-मनोविज्ञान नर- नारी की यौन-तुष्टि का समर्थक है और वर्जनाओं के हटने पर नर- नारी अतृप्त यौनाकांक्षाओं की तृप्त उन्मुक्त रूप से करते हैं । पती के पौरुष्यहीन होने पर अन्य व्यक्ति से यौन-संबंध स्थापित करना नारी की मनोवैज्ञानिक - शारीरिक अनिवार्यता बनती हैं । इस तथ्य की परिणिति ' सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक ' में आती हैं । स्त्री-पुरुष संबंधों की रीढ़ की हड्डी उनके काम-संबंधों क संतुष्टि है अन्यथा पारिवारिक कलह, संघर्ष, उत्तेजना एवं झुंझलाहट व्यक्त हो जाती हैं ।

उचित समय पर विवाह न होने पर और जिसे चाहा उसके साथ न होने पर नारियों किस प्रकार मनोरोगों से ग्रस्त हो जाती हैं । इसका चित्रण उन्मुक्त प्रेम-संबंध के द्वारा ' सेतुबंध ' नाटक में सफल प्रयास में किया है । आर्थिक दबाव के कारण मध्यमवर्गीय नारी आज अर्थोपर्जन के लिए विवश है । आज उसे अनेक पुरुषों के संपर्क में आना पड़ता है । अपने पद और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए अपने

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

अधिकारी की यौन तुष्टि उसकी विवशता बन जाती है । इस कटु यथार्थ का चित्रण ' द्रौपदी ' के अंतर्गत मिलता है ।

अत: स्पष्ट है कि सुरेंद्र वर्मा ने अपने प्रत्येक नाटक में स्त्री-पुरुष संबंधों का चित्रण किया है । कहना गलत नहीं होगा कि पश्चिम के इस आयातित दर्शन के फल स्वरूप उन्मुक्त यौन संबंधों का दर्शन उनके नाटकों में पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगोचर होता है । संक्षेप में सुरेंद्र वर्मा अपने सभी नाटकों में कथ्य, अभिनय, मंचीयता एवं काम-विज्ञान के क्षेत्र में व्यापक रूप में भिन्न-भिन्न प्रयोग करनेवाले एक कुशल तथा बुद्धिजीवी नाटककार दृष्टिगोचर होते हैं ।

आधार-ग्रंथ-सूची

अ. नं.	रचनाकार	रचना का नाम	प्रकाशन एवं संस्करण वर्ष
1.	वर्मा सुरेंद्र	सेतुबंध	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, (1972)
2.	वर्मा सुरेंद्र	द्रौपदी	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, (1972)
3.	वर्मा सुरेंद्र	आठवाँ सर्ग	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, (1981)
4.	वर्मा सुरेंद्र	सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहिली किण तक	राधाकृष्ण प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज (1981)
5.	वर्मा सुरेंद्र	शकुंतला की अंगूठी	नेशनल पब्लिसिंग हाऊस, दिल्ली (1990)